International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 22-12-2022, Accepted: 08-01-2023, Published: 25-01-2023
Volume 9, Issue 1, 2023, Page No. 31-33

रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं में राष्ट्रीय भावना

डॉ. रीता कुमारी
सह–अध्यापक, शेषाद्रीपूरम कम्पोजिट पी, यू, महाविध्यालय, बेंगलूरू, कर्नाटक, भारत

सारांश
आधुनिक युग में हिन्दी काव्य में पौरुष का प्रतीक और राष्ट्र की आत्मा का गौरव गायक जिस कवि को माना गया है, उसी का नाम रामधारी सिंह' दिनकर' है। वाणी में ओज, लेखनी में तेज और भाषा में अबाध प्रवाह उनके साहित्य में देखा जा सकता है। 'दिनकर' का जन्म बिहार के सिमिरिया घाट स्थान पर 30 सितम्बर, 1908 को हुआ। मुंगेर जिले में यह छोटा – सा ग्राम है। इनके पिता का नाम श्री रविसिंह था। कविवर दिनकर ने काव्य – क्षेत्र में 'कुरुक्षेत्र' और 'उर्वशी' जैसी महान् कृतियाँ देने के अतिरिक्त 'रेणुका', 'रसवन्ती', 'सामधेनी', 'बापू', 'रश्मि – रथी', 'द्वन्द्वगीत', 'नील कुसुम', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'आत्मा की आँखें' आदि अनेक कृतियाँ प्रदान की हैं। सन् 1959 में 'पद्मभूषण' की उपाधि से विभूषित हुए। इन्हें 'संस्कृति के चार अध्याय' ग्रन्थ पर साहित्य अकादमी से पाँच हजार का पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन् 1972 में 'उर्वशी' कृति पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया।
देव दुर्विपाक से 24 अप्रैल सन् 1974 को आपका असामयिक निधन हो गया।

मूल शब्दः 'दिनकर', कुरुक्षेत्र, उर्वशी

'राष्ट्रीय भावना' से अभिप्राय

संस्कृत के अनुसार 'राष्ट्र' में 'ध' प्रत्यय के योग से 'राष्ट्रीय' शब्द बनता है। 'राष्ट्र' शब्द से 'राष्ट्रीय' और 'राष्ट्रीय' से 'राष्ट्रीयता' शब्द की संरचना हुई है। राष्ट्र विशेष के गुणों या राष्ट्र के प्रति विशिष्ट प्रेम को राष्ट्रीयता की संज्ञा दी जा सकती है। इस प्रकार राष्ट्रीयता राष्ट्र विशेष की आत्म – चेतना है। राष्ट्रीयता के अन्तर्गत राष्ट्र या देश के प्रति व्यक्ति का संवेदनशील घनिष्ठ संबंध होता है। राष्ट्रीयता मनुष्य की सहज और स्वाभाविक वृत्तियों में से एक है, जिसके आधार पर वह अपने देश के प्रति आत्मीय लगाव का अनुभव करता है। वह अपने देश को समुन्नत, विकसित और गतिशील बनाने के लिए सदैव उत्सुक रहता है। इसी भावावेश में वह राष्ट्र की रक्षा, कल्याण और विकास के लिए सर्वस्व न्योछावर करते हुए अपना गौरव समझता है। यह निर्विवाद सत्य है कि जब व्यक्ति 'स्व' की परिधि से बाहर आकर सामाजिक संदर्भ में धार्मिक जातीय और धार्मिक संस्पर्श करता हुआ राष्ट्रीयता के विशाल परिवेश में पहुँचता है, तो उसमें दिव्य और आदर्श भाव विकसित हो जाते हैं। राष्ट्र – प्रेम मानव में राष्ट्र के समाज, प्रकृति, उसकी संस्कृति, उन्नति और विकास के प्रति भावात्मक लगाव उत्पन्न करता है। राष्ट्र – प्रेम मानव – मन में उत्साह, त्याग और उत्सर्ग का अपूर्व भाव भरता है। सच्चा राष्ट्र – प्रेम आत्मा के दिव्य भाव का साक्षात्कार करता है, जिससे देश के समस्त मानव, पशु – पक्षी और प्रकृति से आत्मीय लगाव का अनुभव करते हैं। राष्ट्र – प्रेम की मनमोहक छाया में पहुँचकर मानव के मन का भावात्मक विकास भूत, वर्तमान से लेकर भविष्यत तक हो जाता है। राष्ट्र – प्रेम में स्वदेश के प्रति आदर और सम्मान का भाव होता है। इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए बाबू गुलाबराय ने कहा है – किसी विशिष्ट भौगोलिक इकाई के जनसमुदाय के पारस्परिक सहयोग और उन्नति की अभिलाषा से प्रेरित, उस भू – भाग के लिए प्रेम और गर्व की भावना को' राष्ट्रीयता' कहते हैं। वस्तुतः राष्ट्रीयता एक अनूठी भाव – धारा है, जिसमें राष्ट्र के सूक्ष्म और स्थूल दो तथ्यों के प्रति उत्तरोत्तर लगाव दिखाई देता है। राष्ट्रीयता के स्थूल तथ्यों में भौगोलिक और प्राकृतिक संदर्भ आते हैं, तो सूक्ष्म तथ्यों में सांस्कृतिक, धार्मिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, कलात्मक, भाषायी चेतना आती है।

राष्ट्रीयता के संदर्भ में राष्ट्र की भौगोलिक सीमा के प्रति निष्ठा होना प्राथमिक आधार है। भौगोलिक सीमा राष्ट्र की भूमि और उसकी पहचान निर्धारित करती है। भूमि विषयक देश – प्रेम मनुष्य में राष्ट्रीयता की पावन चेतना का आधार सिद्ध होता है। भू – भाग के आधार पर ही समस्त जन – समूह के प्रति सहज स्नेहिल भाव उभरता है। यदि भूमि की विभिन्न वस्तुओं के प्रति लगाव बढ़ता है तो प्रकृति से उदात्त तत्त्वों का विकास होता है। संस्कृति की भाव – तरंगिणी राष्ट्र की अनुप्रेरक आत्मशक्ति है। वस्तुतः संस्कृति राष्ट्र को महिमा मंडित करने वाली आत्मशक्ति है। मनुष्य का संस्कारित आदर्श विचार उसे मानवतावादी धरातल पर पहुँचा देता है और फिर अनुकरणीय राष्ट्रीयता का विकास होता है। संस्कृति के अन्तर्गत आदर्श, परम्पराएँ, रीति – रिवाज, साहित्य, संगीत और कला की बलवती भूमिका होती है। राष्ट्रीयता के लिए सांस्कृतिक एकता – अनिवार्य तत्त्व है और इसके विद्यमान रहने पर ही राष्ट्र में एकता की भावना जागृत होती है। राष्ट्रीय चेतना में धार्मिकता की बलवती भूमिका होती है। राष्ट्रीयता में व्यक्ति राष्ट्र की गौरव – गरिमा की रक्षा के लिए समर्पित होने के लिए तत्पर रहता है। राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में ऐतिहासिक संदर्भों की महती भूमिका होती है। देश के निर्माण में ऋषि, मुनियों, महात्माओं, मनीषियों के चिंतन और गतिशीलता का विशेष योगदान होता है।

अतीत की गौरव – गाथा से जन – मन को सन्मार्ग पर गतिशील रहने की प्रेरणा मिलती है। निश्चय ही, राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्र की स्वतंत्रता, अखंडता और एकता की पावन – त्रिवेणी का प्रवाह होता है।

'चेतना' शब्द अंग्रेजी शब्द कानशियसनेस का हिन्दी पर्यायवाची है। डॉ. रामप्रसाद त्रिपाठी ने चेतना को विवेकपूर्ण वैचारिकी माना है।

'दिनकर' की राष्ट्रीय चेतना

दिनकर जी का अधिकांश साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। चीन से युद्ध के दिनों में 'दिनकर' की 'परशुराम की प्रतीक्षा' कविता अत्यन्त प्रसिद्ध हुई। इस कविता में देश के सैनिकों को अहिंसा त्यागकर पौरुष बनने का आह्वान किया गया है। सन् 1962 के चीनी – भारतीय – युद्ध के समय कविवर 'दिनकर' ने

'परशुराम की प्रतीक्षा' कविता में देश के पौरुष को जागृत करते हुए सिंह गर्जना की थी –

वैराग्य छोड़ बाहों की विभा संभालो,
चट्टानों की छाती से दूध निकालो।
है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चन्द्रमाओं को पकड़ निचोड़ो।
चढ़ तुंग शैल शिखरों पर सोम पियो रे,
योगियों नहीं, विजयी के सदृश जियो रे।
(परशुराम की प्रतीक्षा)

'दिनकर' अपनी काव्य – चेतना के बारे में लिखते हैं –

क्रांति – धात्रि कविते! उठ अंबर में आग लगा दे।
पतन, पाप, पाखंड जले, जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।

'दिनकर' प्रेम, राष्ट्रीयता, मानवता और क्रांति के गायक हैं। उनकी कविता में राष्ट्र – व्यापी जागरण का स्वर है। एक ओर वे अपने अतीत से प्रभावित हैं तो दूसरी ओर वर्तमान की अधोगति से क्षुब्ध। प्राचीन गौरव के प्रति उनके मन में अगाध श्रद्धा है। दिनकर की कविता में दीन, दुः खी और दलितों के प्रति सहानुभूति एवं संवेदना भी है। उन्होंने श्रमिकों और कृषकों के दयनीय जीवन का मार्मिक अंकन किया है। निम्न पंक्तियों में उनकी सहानुभूति एवं संवेदना द्रष्टव्य है –

आहें उठो दीन कृषकों की।
मजदूरों की तड़प पुकारें।
अरी गरीबी के लोहू पर,
खड़ी हुई तेरी दीवारें .....।

कवि ने हिमालय का मानवीकरण किया है। वास्तव में, कवि हिमालय के माध्यम से भारतीयों को संबोधित करते हुए कहते हैं –

ओ, मौन तपस्वी – लीन यती।
पत भर को तो कर दृगोन्मेष।
रे ज्वालाओं से दग्ध, विकल
है तड़प रहा पद पर स्वदेश
सुख – सिन्धु, पंचनद, ब्रह्मपुत्र,
गंगा, यमुना की अमिट – धार,
जिस पुण्यभूमि की ओर बही,
तेरी विगलित करुणा उदार।
(हिमालय)

कविवर दिनकर कहते हैं – हे हिमालय, देश के कितने वीर पुरुष रूपी रत्न हमसे छिन गए, जो स्वतंत्रता की चिनगारी जलाए रहे। भारत का अनंत वैभव चला गया। हिमालय समाधिस्थ होकर साधना ही करता रहा और प्यारा देश भारत इन वीर रत्नों से रहित हो गया। महाभारत काल में दुःशासन ने केवल एक द्रौपदी के बाल खींच लिये थे, जिसके कारण महाभारत के भयंकर युद्ध की योजना बनाई गई और आज न जाने कितनी स्त्रियों के सतीत्व को लूटा जा रहा है और कितनी कन्याओं का अपहरण हो रहा है, किन्तु फिर भी किसी के मन में पीड़ा नहीं कि इन अत्याचारों का प्रतिरोध किया जाए। चित्तौड़ से पूछो कि जरा – सा अत्याचार होने पर या किसी नारी की ओर किसी की कुदृष्टि होने पर बड़े – बड़े संग्राम रचे गए और नारियाँ जौहर व्रत करके जीते – जी अपने प्राणों की बलि दे दिया करती थीं। कवि ने इसी पीड़ा को निम्न शब्दों में प्रकट किया है –

कितनी मणियाँ लुट गई ? मिटा
कितना मेरा वैभव अशेष।
तू ध्यान – मग्न ही रहा, इधर
वीरान हुआ प्यारा स्वदेश।
कितनी द्रौपदियौं के बल खुले ?
किन – किन कलियों का अंत हुआ ?
कह हृदय खोल चित्तौड़ ! यहाँ
कितने दिन ज्वाल – बसंत हुआ ?
(हिमालय)

हिमालय का गौरव – गान करके देशोद्धार की प्रेरणा देते हुए कवि भारत के अतीत वैभव और वीर भाव को जगाना चाहता है। कवि हिमालय को संबोधित करके कहता है कि हे हिमालय ! आज इस समय हमें अर्जुन और भीम तथा उनके क्रमशः गांडीव धनुष और गदा की आवश्यकता है। उन्हें लौटा दे। आज युद्ध में पूर्ण पराक्रम दिखाकर शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाले योद्धाओं की आवश्यकता है। कवि शंकर के आवास – स्थल हिमालय से प्रार्थना करता है कि तू शिवजी से प्रार्थना कर कि वे पुनः एक बार तांडव नृत्य करें जिससे सारे भारत में 'हर – हर', 'बम – बम' की ध्वनि गूँज उठे जिसकी अंगड़ाई लेकर सारी भूमि काँप उठे अर्थात् सर्वत्र भयंकर हलचल मच जाए। यथा –

रे रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,
जाने दे उनकी स्वर्ग धीर,
पर, फिरा हमें गांडीव – गदा,
लौटा दे अर्जुन – भीम वीर।
कह दे शंकर से, आज करें,
के प्रलय – नृत्य फिर एक बार।
सारे भारत में गूँज उठे,
हर – हर, बम – बम का फिर महोच्चार।
(हिमालय)

कवि देश के लोगों को जागृत करते हुए कहता है कि लक्ष्य पास आ जाने पर थक कर बैठ जाना उचित नहीं है –

दिशा दीप्त हो उठी प्राप्त कर पुण्य – प्रकाश तुम्हारा।
लिखा जा चुका अनल – अक्षरों में इतिहास तुम्हारा।
जिस मिट्टी ने लहू पिया, वह फूल खिलायेगी ही,
अम्बर पर धन बन छाएगा ही उच्छवास तुम्हारा।
और अधिक ले जाँच, देवता इतना क्रूर नहीं है,
थककर बैठ गये क्यों भाई! मंजिल दूर नहीं है।
(आशा का दीपक)

उक्त कविता का आशय यह है कि – जिस भारत भूमि की स्वतंत्रता के लिए इतने बलिदान हुए, उसमें स्वतंत्रता का फूल खिलकर ही रहेगा। यह आशा अवश्य फलवती होगी। हमारी पीड़ा जन्य साँसें आकाश में बादल बनकर अवश्य छायेगी जिससे स्वतंत्रता के रूप में सुखों की वर्षा होगी। हे भाई, अब लक्ष्य निकट ही है, अतः थक कर मत बैठो। तुम साधना – श्रम करो जिससे तुम शीघ्र लक्ष्य की प्राप्ति कर सको।
'आग की भीख' कविता में देश की दयनीय स्थिति का चित्रण करते हुए भगवान से स्वदेश के हित वरदान की भीख माँगता है कि उसके देश की सारी बुराइयाँ दूर हो जायें –

मन की बंधी उमंगें असहाय जल रही हैं,
अरमान – आरजू की लाशें निकल रही हैं।
भीगी – खुली पलों में रातें पुकारते हैं।
सोती वसुंधरा जब, तुझको पुकारते हैं।

इनके लिए कहीं से निर्भीक तेज ला दे,
पिघले हुए अनल कर इनको अमृत पिला दे।
उन्माद, बेकली का उत्थान माँगता हूँ,
विस्फोट माँगता हूँ, तूफान माँगता हूँ।

अर्थात् हे प्रभु ! देश के युवकों के हृदयों में हिलोरे ले रही उमंगें साधनों के अभाव में व्यर्थ जल रही हैं। उनके मन की इच्छाओं और तमन्नाओं का जनाजा निकल रहा है। आँखों से निकले आँसुओं के कारण भीगी और खुली आँखों के साथ पल – पल गिनकर रातें काट देते हैं। जब सारी धरती सुखपूर्वक सो रही होती हैं तो ये निराश युवक सहायता के लिए तुझे पुकारते हैं। हे प्रभु! तू इन युवकों के हृदय में निर्भीक तेज का संचार कर दे।
कविवर दिनकर ने ओजस्वी शब्दों में राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में अतीत का गौरव – गान किया है। 'रेणुका' में संकलित 'हिमालय' कविता में वे कहते हैं –

तू पूछ अवध से, राम कहाँ ? वृंदा घनश्याम कहाँ ?
ओ मगध ! कहाँ मेरे अशोक ? वह चन्द्रगुप्त बलधाम कहाँ ?
री कपिलवस्तु ! कह बुद्ध देव के ये मंगल उपदेश कहाँ ?
तिब्बत, इरान, जापान, चीन तक गये हुए संदेश कहाँ ?

वस्तुतः कविवर 'दिनकर' संवेदनशील कवि हैं। उनका अधिकांश साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। उन्होंने सामाजिक उत्थान – पतन और आंदोलन से प्रभावित होकर काव्य – सृजन किया है। देश पर जब – जब संकट के बादल घिरते हैं, मानव – जीवन संघर्ष में जूझने लगता है, तब तब 'दिनकर' की कविता जन – मानस में ऊर्जा का संचार करती है। उनकी कविता देश की संस्कृति, सभ्यता, भाषा, परम्परा और आदर्श आदि की अनूठी एकता की आधारभूमि प्रस्तुत करती है।

संदर्भ सूची

1. दिनकर एक शताब्दी, डॉ स्वयंवती शर्मा, डॉ, दिनेश कुमार.
2. राष्ट्रकवि दिनकर एवं उनकी काव्य कला, शिखर चन्द्र जैन
3. दिनकर का वीरकाव्य, धर्मपाल सिंह आर्य
4. दिनकर व्यक्तित्व और रचना के नये आयाम, डॉ गोपाल राय सत्यकाम
5. दिनकर की काव्यभाषा, डॉ यतीन्द्र तिवारी
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नागेन्द्र